



FuturePointIndia.com
(फ्यूचर पॉइंट द्वारा रचित)

The Ultimate Astrological Software

संस्करण: अंग्रेजी | हिन्दी

मंगलवार, अगस्त 21, 2012

मुखपृष्ठ | आपके विचार | हमसे मिलिए

चैनल

- राशिफल
- ज्योतिष संस्था *नया*
- ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट ढूँढिए



आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं

[पिछले माह के परिणाम](#)

भवन में जल स्थान

डॉ. भोजराज द्विवेदी, जोधपुर

अग्नि कोण में जल स्थान कभी नहीं होना चाहिए। पिछले साल की बात है। एक जैन सेठ अपने जन्म स्थान (गांव) में बड़ी आलीशान कोठी बनवा रहे थे। परंतु तीन वर्ष हो गये और कोठी थी कि बनने का नाम ही नहीं ले रही थी। सेठ के पास धन पर्याप्त होने पर भी कभी सीमेंट है, तो लोहा नहीं; दोनों हैं, तो मजदूर नहीं; मजदूर काम पर आ गये, तो इंजीनियर,— ठेकेदार समय पर नहीं पहुंच पाये। सभी लोग तैयार हों, तो बिजली नहीं। बिजली आ गयी तो मशीन खराब हो गयी। सब कुछ ठीक है, तो सेठजी की गाड़ी रास्ते में खराब। कभी निर्माण स्थान पर मजदूर मर गया, तो कभी और कोई नयी समस्या खड़ी हो गयी। कुल मिला कर तीन साल में कोठी तो बनी नहीं, पर अनेक प्रकार की समस्याओं का अंबार लग गया।

उपर्युक्त जैन दंपति वास्तु विशेषज्ञ के पास आये और पूरा दुःखड़ा सुनाया। उनके अत्यधिक आग्रह को देख कर वास्तुकार ने निर्माण स्थल पर जाने की स्वीकृति दे दी। नौ घंटे के लंबे सफर के बाद वह उनके गांव पहुंचे, तो देखा पानी के लिए बोरिंग भवन के अग्नि कोण में किया गया था। जबसे बोरिंग हुई, तबसे एक के बाद एक परेशानियों का अंबार लग गया। सेठजी का एक लड़का भी छत से गिर कर दुष्ट टिनाग्रस्त हो गया था। उस बोरिंग का स्थान ईशान कोण में करवाया गया तथा भवन की छत पर बीचोंबीच बने जल संग्रह (पानी की टंकी) को हटाया गया। सेठ जी की सारी समस्याएं समाप्त हो गयीं।

कई बार छोटी-छोटी गलतियां बड़ा दुःख देती हैं। शास्त्रों के अनुसार जल (वरुण) स्थान ईशान्य, उत्तर, पूर्व, पश्चिम में तो हो सकता है, पर आग्नेय कोण में पुत्र नाश, शत्रु भय, बाधा, नैर्ऋत्य में पुत्र हानि, दक्षिण में पत्नी का नाश, वायव्य में शत्रु द्वारा पीड़ा तथा घर के मध्य में हो, तो संग्रहित धन का नाश होता है।

नदी-नाला :

भूखंड या भवन के दक्षिण और पश्चिम दिशा के समानांतर कोई भी नदी, नाला, नहर नहीं होना चाहिए। पर यदि नदी, नाला उत्तर या पूर्व दिशा की ओर हों, तो उत्तम है। खास कर जल प्रवाह पश्चिम से पूर्व, या दक्षिण से उत्तर की ओर होना चाहिए।

कूप, टंकी या हैडपंप :

If you are not able to view the page properly then [Download Hindi Font.](#)

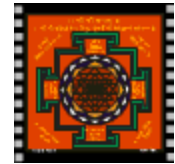
पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी

.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



• हमारी साइट को अपने Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित लियो गोल्ड, विंडोज पर आधारित जन सामान्य के प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है।
और

कोई भी कुआं भूखंड के आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य कोण अथवा दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए। कुआं या जल संग्रह का स्थान भूखंड के पश्चिम, पूर्व, उत्तर एवं ईशान्य कोण में शुभ माने गये हैं।

भोजनशाला :

भोजनशाला में चूल्हा, अग्निवास हमेशा आग्नेय कोण में ही होना चाहिए तथा ईशान में तो कभी भी नहीं होना चाहिए। बॉयलर, हीटर, ए.सी. कंट्रोल, मीटर, ओवन, गैस का चूल्हा, ड्रायर वगैरह सभी ज्वलनशील वस्तुएं भी अग्नि कोण में ही स्थापित होनी चाहिए। सभी प्रकार के विद्युत यंत्र एवं भारी विद्युत मशीनों हेतु अग्नि कोण ही उत्तम माना गया है।



लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

शयन कैसे करें?

व्यक्ति को किस प्रकार से सोना चाहिए, इस विषय में सम्यक विचार किया गया है। कहा गया है: 'स्वस्थ आयु चाहने वाले मनुष्य को सदैव अपना सिर दक्षिण में एवं पांव उत्तर दिशा की ओर रख कर सोना चाहिए।'

शास्त्रों के अनुसार मृत्यु का देवता यम दक्षिण दिशा का स्वामी है। इसलिए गांवों एवं शहरों में श्मशान हमेशा दक्षिण दिशा में होते हैं। वह व्यक्ति जो अपने पांव दक्षिण की ओर कर के सोता है, निश्चय ही यम लोक की ओर प्रस्थान करता हुआ दिखलाई देता है। धन के अधिपति कुबेर उत्तर दिशा के स्वामी कहे गये हैं। जो व्यक्ति उत्तर दिशा की ओर पांव कर के सोता है, वह मानो धन प्राप्ति एवं कुबेर के आशीर्वाद हेतु उत्तर दिशा की ओर गमन करता हुआ प्रतीत होता है।

देवताओं के राजा इंद्र पूर्व दिशा के स्वामी कहे गये हैं। सुबह उठते ही इस दिशा का दर्शन करना, देवेंद्र से अपनी संपन्नता के लिए आशीर्वाद लेने के समान पुण्य कार्य है। इसलिए कई लोग अपना सिर पश्चिम की ओर एवं पांव पूर्व की ओर कर के सोते हैं। जल के अधिपति वरुण पश्चिम दिशा के स्वामी कहे गये हैं, जो हमारी आत्मा, आध्यात्मिक भावना एवं विचारों को प्रभावित करते हैं। अतः कुछ विद्वानों ने पूर्व की ओर सिर रख कर तथा पश्चिम की ओर पांव रख कर सोना शुभ माना है।

जो लोग उत्तर की तरफ सिर रख कर एवं दक्षिण की तरफ पांव रख कर सोते हैं, उनको कभी भी अच्छी नींद नहीं आएगी। ऐसे लोग रात भर करवटें बदलते रहेंगे एवं सुबह तनावपूर्ण माहौल में उठेंगे और बदन में टूटन महसूस होगी।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य का शरीर चुंबकीय तरंगों से प्रभावित होता है एवं स्वयं सूक्ष्म चुंबकीय तरंगों को फेंकता भी है, जो प्रभा मंडल में आकर्षण तथा विकर्षण उत्पन्न करती हैं। जिस प्रकार भूगोल के अनुसार पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव है, ठीक उसी प्रकार मानव शरीर का सिर वाला हिस्सा उसका उत्तरी पोल है। मानव शरीर का सिर वाला हिस्सा, जन्मजात प्रवृत्तियों के कारण, पृथ्वी के

उत्तरीय पोल की चुंबकीय तरंगों से प्रभावित रहता है। अतः संपूर्ण सुखद विश्राम के लिए मनुष्य का सिर वाला हिस्सा सदैव दक्षिण ध्रुव की ओर होना चाहिए, ताकि चुंबकीय तरंगें सही दिशा में प्रवाहित हो सकें। इसके विपरीत दिशा में सिर रख कर सोने से चुंबकीय प्रवाह प्रताड़ित हो कर बिगड़ जाएगा एवं प्रतिकूल रश्मि प्रवाह के कारण मनुष्य को ठीक से निद्रा नहीं आएगी।

हमारे पूर्वाचार्यों ने इस विषय में अनुसंधान किया और कहा:

सुप्ते प्रत्यक् शिरेमृत्युः वशाद आरुक् सुतार्तिदः। अर्वाक् शिरोहयनिंद्रादा,
दक्षिणे सुख संपदः॥ पश्चिमे प्रबला चिंता, हानिर्मृत्युत्तथोत्तरे॥ स्वगेहे
प्राक्शिराः सुप्यात्, स्ववासे दक्षिणे शिरः। प्रत्यक् शिरः प्रवासेतु, नोदक्यां
वै कदाचन॥

अर्थात्, पश्चिम में सिर कर के सोने से मनुष्य, मृत्यु के वश में होता हुआ, नाना प्रकार के रोगों से ग्रसित होता है एवं उसकी संतान कष्ट पाती है। उत्तर की तरफ सिर कर के सोने से मनुष्यों को झूठे स्वप्न आते हैं, व्यर्थ के जंजाल दिखते हैं तथा नींद न आने की बीमारी होती है, जबकि दक्षिण में सिर रख कर सोने से सुख- संपत्ति की प्राप्ति होती है।

पश्चिम में प्रबल चिंताएं और उत्तर में धन हानि तथा मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। अपने घर में पूर्व की तरफ अथवा दक्षिण की तरफ सिर कर के सोएं। पश्चिम दिशा पर अपवाद करते हुए आचार्य कहते हैं, कि प्रवास (यात्रा के समय) में पश्चिम की ओर सिर कर के सोया जा सकता है, पर उत्तर में सिर कर के न सोएं।

FuturePointIndia.com के बारे में | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

[ऊपर](#)

[पयुचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट](#)